CBSE Test Paper 03
Ch-4 नाना साहब की पुत्री और देवी मैना को भस्म कर दिया गया

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**
   पर पाषाण-हृदय वाले जनरल ने उसकी अन्तिम इच्छा भी पूरी होने न दी। उसी समय मैना के हाथ में हथकड़ी पड़ी और वह कानपुर के किले में लाकर कैद कर दी गयी।
   उस समय महाराष्ट्रीय इतिहासवेत्ता महादेव चिटनवीस के "बाखर" पत्र में छपा था-
   कल कानुपर के किले में एक भीषण हत्याकाण्ड हो गया। नाना साहब की एकमात्र कन्या मैना धधकती हुई आग में जलाकर भस्म कर दी गयी। भीषण अग्नि में शान्त और सरल मूर्ति उस अनुपमा बालिका को जलती देख, सब ने उसे देवी समझ कर प्रणाम किया।"

   i. किसने, किसकी और कौन-सी इच्छा पूरी नहीं होने दी?
   ii. अंग्रेज़ों द्वारा मैना पर किए गए अत्याचार को अपने शब्दों में लिखिए।
   iii. लोगों ने मैना के प्रति अपनी श्रद्धा कैसे प्रकट की?

2. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन-कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया?

3. 'नाना साहब की पुत्री मैना देवी को भस्म कर दिया गया' -पाठ में मैनो के वर्णन के माध्यम से युवाओं को क्या संदेश दिया गया है?

4. बालिका मैना के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ आप अपनाना चाहेंगे और क्यों?

5. लंदन से प्रकाशित लेख में नाना के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया गया है और क्यों?

6. मैना से उसका परिचय जानकार सेनापति 'हे' के होश क्यों उड़ गए?

CBSE Test Paper 03

Ch-4 नाना साहब की पुत्री और देवी मैना को भस्म कर दिया गया

Answer

1. i. मैना की अंतिम इच्छा थी कि उसे अपने पिता के भग्न प्रासाद के अवशेष पर बैठकर रो लेने दिया जाए पर जनरल अउटरम ने मैना की इस अंतिम इच्छा को पूरा नहीं होने दिया |
   ii. अंग्रेज़ सरकार में दया नामक भाव न था। वे भारतीयों से बदला लेने के लिए पशुता की किसी सीमा तक गिर सकते थे। अपनी खीझ उतारने के लिए उन्होंने मैना को जिंदा ही आग के हवाले कर दिया। उनकी क्रूरता एवं नीचता की यह हद थी।
   iii. लोगों ने शांत और सरल मैना को आग में जलते देख उसे देवी समझा और उसके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए उसे प्रणाम किया।

2. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को निम्नलिखित तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया-

   i. यह मकान तो निर्जीव है, यह किसी का क्या बिगाड़ सकता है।
   ii. उसका बचपन यहीं बीता । वह इसी महल में पलकर बड़ी हुई है इसलिए इस महल से उसका भावनात्मक लगाव है।
   iii. अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठाने वाले को आप सजा दीजिए।
   iv. आपकी पुत्री और मैं साथ-साथ खेलती थीं, तब आप भी यहाँ आया-जाया करते थे।
   v. आपकी पुत्री की एक चिट्ठी अब तक मेरे (मैना) पास है।

3. नाना साहब की पुत्री मैना देवी के वर्णन से माध्यम से युवाओं को यह संदेश दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी मातृभूमि का स्थान सर्वोपरि होता है इसलिए उसकी रक्षा के लिए अपना तन-मन-धन अर्पित कर देना चाहिए। इसकी रक्षा के लिए हर कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिए । इसकी रक्षा के लिए हमें घर-परिवार और अपने प्राण भी त्यागने पड़े तो निश्चिंत होकर त्याग देने चाहिए। अपनी मातृभूमि के साथ हमें किसी तरह का द्रोह नहीं करना चाहिए। यदि कोई इसकी ओर आँख उठाए तो साहस और निडरता के साथ उसका मुकाबला करना चाहिए।

4. बालिका मैना के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हम अपनाना चाहेंगे -

   i. **देश-प्रेम की भावना-** मैना में देश-प्रेम तथा देशभक्ति की भावना भरी थी। उसने देश पर जान न्योछावर कर दी थी।
   ii. **निडर व साहसी -** मैना निडर व साहसी थी। वह जनरल 'हे' से अपनी बातें साहसपूर्वक कह देती है और महल ध्वस्त होने के बाद भी वह अंग्रेजी सेना से भयभीत होकर, छिपकर अन्यत्र नहीं गई।
   iii. **वाक्पटुता-** मैना ने अपनी वाक्पटुता से अंग्रेज़ सेनापति 'हे' को महल न गिराने के लिए सोचने पर विवश कर दिया।
   iv. **उत्सर्ग की भावना-** नाना के अचानक जाने और मकान गिराने के बीच वह भी कहीं जा सकती थी, पर मातृभूमि पर अपनी जान देकर उसने अपनी उत्सर्ग की भावना का परिचय दिया।
   v. **भावुकता-** मैना जड़ पदार्थ महल से भी प्यार करती हैं। वह महल के अवशेष के लिए भी रोती है। ये गुण व्यक्ति में राष्ट्र-

प्रेम एवं देशभक्ति की भावना मजबूत बनाते हैं। हम इन गुणों को अपनाना चाहेंगे क्योंकि इनसे हमारी देशभक्ति और देशप्रेम की भावना को अधिक बल मिलता है ।

5. लंदन से प्रकाशित लेख में नाना के लिए ‘दुर्दांत’ विशेषण का प्रयोग किया गया है। उन्होंने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में विद्रोहियों का नेतृत्व किया और अंग्रेज़ी सेना को बहुत क्षति पहुँचाई थी इसलिए उनके लिए नाना साहब भयानक अपराधी थे। वे उन्हें पकड़ न सके और चालाकी से बच निकलने के कारण उनके लिए ‘दुर्दांत' शब्द का प्रयोग किया गया है।

6. मैना ने जब बताया कि उनकी पुत्री और वह (मैना) घनिष्ठ सहेली थी। उस समय वह स्वयं भी मैना के राजमहल में आते जाते थे। उसने मित्रता के प्रमाण के रूप में उसकी चिट्ठी होने की बात कही। उसने 'हे' को बताया कि वे मैना से भी अपनी पुत्री के समान ही स्नेह करते थे। सेनापति 'हे' ने कभी सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था। अतः मैना की बात सुनकर उनके होश उड़ गए।